वैखानस सम्प्रदाय: एक दृष्टि

पं. मार्कण्डेय शारदेय*

वैष्णवागमों के अन्तर्गत वैखानस शाखा का उल्लेख मनु ने भी किया है। इसका सम्बन्ध ऐसे तपस्वियों के साथ प्रतीत होता है, जो पृथ्वी पर स्वयं उत्पन्न फल-मूल खाकर तपस्या करते थे। इन्होंने कभी खाने के लिए धरती को नहीं खोदा। ये वैदिक काल में "अकृष्टपच्या:" कहलाते थे। यही भाव वैखानस (वि+खन् से निष्पन्न) शब्द में है। वैष्णवागम की 3 शाखाओं पाञ्चरात्र, भागवत एवं वैखानस में से इस सम्प्रदाय पर यहाँ विवेचन प्रस्तुत है।

*सनातन ज्योतिष, पाटलिग्राम एपार्टमेंट, शहीद भगत सिंह पथ, बजरंगपुरी, गुलजारबाग, पटना-800007 मो. 8709896614, Mail : markandeyshardey@gmail.com

हमारी संस्कृति विविधताओं से भरी पड़ी है। इसके बावजूद समन्विति की कमी नहीं। 'कारण क्या है?' तो इसका उत्तर वेदप्रमाण है। हमारे आचार-विचार वेदविहित होना आवश्यक है। इसीलिए श्रुतियों, स्मृतियों द्वारा अनुमोदित कर्म धर्म कहा गया। मतभिन्नताएँ, परम्पराएँ स्वाभाविक हैं, परन्तु शास्त्रीय निकष पर शुद्ध, सिद्ध व प्रामाणिक होना ही चाहिए। नहीं तो जिसे जो भाए, वह मत चला देगा, चलता भी है। फिर भी असिद्ध मतों को धर्म नहीं, धर्माभास ही कहा गया।

हमारे यहाँ जितने प्रमुख सम्प्रदाय हैं, वे सभी वेदों से ही अपने सिद्धान्तों की पुष्टि करते हैं, सभी श्रुतिप्रमाण लेकर ही चलते हैं।उन्हें पता है कि श्रुतिभिन्न प्रमाण यहाँ ग्राह्य नहीं। इसीलिए देश, काल, परिस्थितियों से निष्पन्न चिन्तन, मत, सिद्धान्त भी भटक नहीं सकते। जो भटके, उन्हें नास्तिक कहकर अलग कर दिया गया।

एक ही नदी बहती-बहती समुद्र तक चली जाती है या किसी अन्य नदी में समाहित हो जाती है। उसके अनेक रूप होते हैं, अनेक तट होते। तटों का कहीं-कहीं, कुछ-कुछ नाम भी हो जाता है। लेकिन नदी तो वही रहती है! वैदिक साहित्य विपुल एवं बहुआयामी है। इसलिए मतप्रवर्तकों को स्वयं को जोड़ने में असुविधा नहीं होती। यही कारण है कि वैष्णव, शैव, शाक्त आदि वैदिक भावना से अलग नहीं।

उपासना का ही क्षेत्र लें तो यहाँ निर्गुणोपासना है तो सगुणोपासना भी। एकेश्वरवाद है तो बहुदेववाद भी। यहाँ वैष्णव हैं तो शैव, शाक्त, गाणपत एवं सौर भी। यहाँ ज्ञानयोग है तो क्रियायोग तथा भक्तियोग भी। वैदिक विधियाँ हैं तो तान्त्रिक भी। यहाँ सम्प्रदायों की शाखाओं, उपशाखाओं की भी अन्यूनता है। केवल वैष्णव सम्प्रदाय की ही बात की जाए तो वैखानस, श्रीराधावल्लभ, गोकुलेश, वृन्दावनी, पाञ्चरात्र, वीरवैष्णव, रामानन्दी, हरिव्यासी, निम्बार्क एवं भागवत के अतिरिक्त रामानुजी, मध्वी, वल्लभी, चैतन्यी हैं। चूँकि तन्त्रों के विकास के कारण हमारी संस्कृति निगमागम-मूलक हो गई, इसलिए वैष्णवी सिद्धान्त भी वैदिक, तान्त्रिक एवं मिश्रित हैं। इसी कारण वैष्णवागमों में पाञ्चरात्र, भागवत एवं वैखानस, इन तीन की प्रमुखता है।यहाँ आगम तन्त्र का वाचक है,जिसकी अनेकशः परिभाषाएँ हैं। उनमें एक है-

आगतं पञ्चवक्त्रात्तु गतं च गिरिजानने।
मतं च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते।।

अर्थात्, वासुदेव (विष्णु) का जो मत पञ्चवक्त्र (शिव) के मुख से निकलकर गिरिजा (गौरी) के मुख में आया; यानी विष्णु का सिद्धान्त शिव ने अध्ययन कर उसे पार्वती को समझाया, इसके बाद गौरी ने जिसका प्रवचन किया, वह आगम कहलाया।

परन्तु वाचस्पति मिश्र के अनुसार इसकी परिभाषा है- 'आगच्छन्ति, बुद्धिम् आरोहन्ति अभ्युदय-निःश्रेयसोपायाः स आगमः' यानी वे भोग एवं मोक्ष के उपाय, जो हमारी बुद्धि को प्रभावित करते हैं, वे आगम हैं। हाँ, 'वाराही तन्त्र' में इसकी सात विषय-वस्तुएँ भी बताई गई हैं-

सृष्टिश्च प्रलयं चैव देवतानां यथार्चनम्।
साधनं चैव सर्वेषां पुरश्चरणमेव च।।
षट्कर्मसाधनं चैव ध्यानयोगश्चतुर्विधः।
सप्तभिर्लक्षणैर्युक्तमागमं तद्विदुर्जनाः।।

अर्थात्, सृष्टि, प्रलय, देवार्चन, साधना, पुरश्चरण, षट्कर्म- साधन, ध्यान एवं योग; इन सात विषयों से युक्त शास्त्र का नाम आगम है।

'पञ्चरात्रागम'[1] वैष्णव आगमों के प्रमुख दो ही भेद बताते हैं- पाञ्चरात्र एवं वैखानस। च. भास्कर राम कृष्णमाचार्युलु[2] भी यही दो मानते हैं। परन्तु 'वैष्णवागमविमर्शः' के प्रणेता आचार्य श्रीव्रजवल्लभ द्विवेद[3] तीन संख्या बताते कहते हैं-

पाञ्चरात्र भागवतं तथा वैखानसाभिधम्'इति त्रिविधा वैष्णवागमाः श्रूयन्ते'।

यानी, पाञ्चरात्र, भागवत एवं वैखानस; ये तीन वैष्णवागम हैं। तदनुसार बाणभट्ट के हर्षचरित में भागवत एवं पाञ्चरात्र की पृथक्ता वर्णित है। पुनः हयशीर्ष पञ्चरात्र के आदिकाण्ड[4] में भी पच्चीस पाञ्चरात्र की नामावली के साथ ही दस भागवतों की भी नामावली है।'

अस्तु, मुख्य विषय पर आएँ तो 'वैखानस' शब्द विखनस् (विखना) से बना है। श्रीभागवत पुराण में आया है-

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसाप्रार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्त्वतां कुले'।।[5]

अर्थात्, तुम केवल यशोदानन्दन (गोपिकानन्दन) ही नहीं, तुम तो समस्त देहधारियों के हृदय में रहनेवाले साक्षी, अन्तर्यामी भी हो।यह हमें पता है कि तुम ब्रह्माजी की प्रार्थना पर विश्व के रक्षार्थ यदुकुल में अवतीर्थ हुए हो।

यहाँ प्रयुक्त 'विखनसा' (विखनस्) ब्रह्मा का ही पर्याय है। परन्तु 'वैष्णव सम्प्रदाय में वैखानस सम्प्रदाय का वैशिष्ट्य'[6] के लेखक च. भास्कर राम कृष्णमाचार्युलु ने अपने आलेख के नमस्कारात्मक मंगलाचरण में जो प्रस्तुत किया है, उससे व्यक्तिविशेष का बोध होता है। वे कहते हैं-

1 चौधरी, राघवप्रसाद, **'वैष्णवाचार तथा भेद'** (1987) विषय-प्रवेश, प्रथम संस्करण, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, पृष्ठ सं. 10,
2 वैष्णव सम्प्रदाय में वैखानस सम्प्रदाय का वैशिष्ट्य, कल्याण, उपासना अंक, पृष्ठ 558
3 वैष्णवागम विमर्शः, पृष्ठ संख्या-2-3, प्रथम संस्करण, प्रकाशक सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
4 हयशीर्षपञ्चरात्र, आदिकाण्ड, 2. 2-9 5 श्रीभागवतपुराण, 10.31.4
6 कल्याण, उपासना अंक, पृष्ठ सं. 558

नारायणः पिता साक्षात् माता चापि हरिप्रिया।

भृग्वादि-मुनयः शिष्याः तस्मै विखनसे नमः।।

आशय यह कि विखना (विखनस्) कोई मुनि हैं, जिनके पिता विष्णु, माता लक्ष्मी तथा भृगु आदि शिष्य हैं।

इस आधार पर चलें तो वैखनस > वैखानस ब्रह्मा से प्रवर्तित है-

'विखनसं ब्रह्माणं वेत्ति तपसा इति वैखानसः।

'यद्यपि यहाँ 'अण्' प्रत्यय के योग से वैखनस ही होना चाहिए, परन्तु अनुशतिकादि आकृतिगणत्व से उभय पदों वृद्धि के कारण वैखनस न होकर वैखानस बना है।

यह शब्द दो ओर संकेत करता है-

1. वानप्रस्थ की ओर तो

2. मुनिविशेष की ओर।

डा. राघवप्रसाद चौधरी अपनी पुस्तक के 'वैष्णवाचार तथा भेद'[7] में वैखानस वैष्णव के सन्दर्भ में कहते हैं-

"वानप्रस्थ वैष्णवों के चार भेदों में यह अन्यतम तथा प्रथम भेद है। वैखानस वैष्णव अक्षार-लवणभोजी, पुत्रदार-समेत आश्रम अथवा घर में वास करनेवाला, जागरूक रहकर संहिताओं की व्याख्या करनेवाला, अन्य कर्मों से विमुख, स्थण्डिल-अजिनशायी, सदा विष्णुपरायण, नित्य ज्ञान तथा ध्यानपरायण होता है'।

यह तो हुई मुनिवृत्ति, पर लक्ष्मी-नारायण के साक्षात् पुत्र कौन? पता नहीं चलता है। हाँ, हो सकता है कि ब्रह्मा को ही कहा गया हो, क्योंकि विष्णु के नाभिकमल से इनकी उत्पत्ति बताई जाती है और लक्ष्मी से नारायण अलग नहीं-

'लक्ष्मी-नारायणाख्यातम् अतो ब्रह्म सनातनम्।

अहन्तया समाक्रान्तो ह्यहमर्थः प्रसिद्ध्यति।।[8]

अत एव ब्रह्माजी के द्वारा प्रवर्तित धर्म ही वैखानस हो सकता है। लेकिन वेदपाणि ब्रह्मा तो समस्त सृष्टि के ही स्रष्टा हैं, समस्त सिद्धान्तों के, किं बहुना; ज्ञान-अज्ञान की समग्र सूक्ष्मताओं-स्थूलताओं के भी आदि प्रयोक्ता हैं, तो फिर वैखानस को ही ब्रह्मप्रवर्तित क्यों माना जाए? अस्तु; अवश्य यह किसी व्यक्तिविशेष से सम्बन्धित होगा। हाँ, हो सकता है कि दैवी सिद्धान्त से जोड़कर देखा गया हो कि विश्वस्रष्टा के द्वारा प्रवर्तित यह विशिष्ट धर्म है। 'तदधीते तद्वेद' के आधार पर 'अण्' प्रत्यय के योग से यह शब्द प्रचलित हुआ हो। हाँ, कृष्णमाचार्युलु ने वैखानस व विखनोमुनि का संकेत किया है, जो उचित लगता है। पुनः 'आनन्द-संहिता' के अनुसार स्वयं विष्णु ने अपने अंश रूप में अपने समान ही भगवदवतार विखनोमुनि को उत्पन्न किया। इन्होंने उन्हीं के आदेश से नैमिषारण्य में श्रीहरि की चिरकाल तक आराधना कर उन्हीं से श्रौत, स्मार्त रूप सूत्र तथा आगम-सम्बन्धी प्राप्त ज्ञान से डेढ़ करोड़ ग्रन्थों की रचना की। फिर ब्रह्माजी ने उन ग्रन्थों को संक्षिप्त कर मरीचि आदि मुनियों को प्रदान किया।

'त्रिकाण्डशेष'कार पुरुषोत्तम देव 'वानप्रस्थो वैखानसोऽग्रहः'[9] कहकर वानप्रस्थ, वैखानस एवं अग्रह (अगृह); परस्पर तीन पर्याय बताए हैं। इसका अर्थ यह कि यह तृतीय आश्रम से जुड़ा धर्म है, जो बाद में सम्प्रदाय बन गया हो।

वस्तुतः वैखानस सम्प्रदाय वैदिक, पाञ्चरात्र तान्त्रिक एवं भागवत मिश्रित है। इसीलिए 'आनन्दसंहिता' में कहा गया है-

वैखानसं हि निगमः पाञ्चरात्र तथागमः। [10]

7 चौधरी राघवप्रसाद, उपरिवत्, पृष्ठ-258
8 लक्ष्मीतन्त्र, 2.16
9 पुरुषोत्तम देव 'त्रिकाण्डशेष, 2.7.2
10 आनन्दसंहिता, 9.5

पुनश्च,

'वैखानसं पाञ्चरात्र वैदिकं तान्त्रिकं क्रमात्'।।[11]

इसीलिए इन दोनों की ही प्रमुखता है। और इसीलिए डा. चौधरी एक जगह कहते हैं-

पाञ्चरात्रगम यद्यपि सर्वथा वैदिक परम्परा का अनुसरण नहीं करता, तथापि वैदिक परम्परा का इस आगम पर प्रबल प्रभाव है।.....वैखानस शाखा को निगम तथा पाञ्चरात्र को आगम संज्ञा दी गई है। वैखानस आगम को वैदिक तथा पाञ्चरात्र को तान्त्रिक होना कहा गया है। वैखानस की वैदिकता तथा पाञ्चरात्र की तान्त्रिकता, वस्तुतः इन दोनों आगम-साहित्य के से भी स्पष्ट हो जाती है।"[12]

वैदिकता और तान्त्रिकता के कारण वैखानस एवं पाञ्चरात्र को क्रमशः सौम्य तथा आग्नेय कहा गया है-

'विष्णोः तन्त्रं द्विधा प्रोक्तं सौम्यमाग्नेयमित्यपि।
सौम्यं वैखनसं प्रोक्तम् आग्नेयं पाञ्चरात्रकम्।
सौम्याग्नेये तथा प्रोक्ते शास्त्रे वैदिक-तान्त्रिके।

दोनों में तुलना की जाए तो ये बातें खुलकर आती हैं-

1. पाञ्चरात्र में वैदिक मन्त्रों के साथ 'हूं फट्'-जैसे तान्त्रिक मन्त्रों का भी प्रयोग होता है, जबकि परन्तु वैखानस में नहीं।

2. पाञ्चरात्र में मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण-जैसी आभिचारिक क्रियाएँ विहित हैं, पर वैखानस में नहीं।

3. पाञ्चरात्र में मुद्रा-कल्पन व दीक्षाविधि है, वैसा यहाँ नहीं। यहाँ शंख, चक्रादि मुद्राओं का बाह्य रूप न होकर आन्तरिक है। वैखानस-स्मार्तसूत्र(3.13-15) एवं क्रियाधिकार- जैसे ग्रन्थों में विष्णुबलि नाम से गर्भस्थ जीव को अष्टम मास में ही सीमन्तोन्नयन-संस्कार के माध्यम से दीक्षित कर दिया जाता है। यह प्रयोग ठीक वैसा ही है, जैसा कि गर्भस्थ प्रह्लादजी को नारदजी ने दीक्षित किया था। गर्भरक्षा के प्रयोजन से हवन आदि कर विष्णुचक्र से अंकित खीर गर्भिणी को खिलाया जाता है।

और भी कई भिन्नताएँ हैं। परन्तु यहाँ मुख्य ध्येय यह है कि स्वयं नारायण ही मुद्रा धारण कराते हैं (नारायण स्वयं गर्भे मुद्रां धारयते निजाम्।), इसलिए मन्त्र-प्रयुक्त अन्न-पान के माध्यम से सांसारिक प्रभाव से जीव को दूर रखने के लिए गर्भावस्था में ही संस्कारी व वैष्णव बनाने का यहाँ सदुपाय है।

हमारे यहाँ साकार-निराकार ब्रह्म की आराधना प्रचलित है। वैखानस सम्प्रदाय भी दोनों को मानता है, पर वरीयता साकार को ही देता है-

साकारं च निराकारं भवत्याराधनं द्विधा।
प्रतिमाराधनं श्रेष्ठं साकारमभिधीयते।।
स्थण्डिले सलिले वापि हृदये सूर्यमण्डले।
आराधनं निराकारं तयोः साकारमुत्तमम्'।।[13]

वस्तुतः साकारोपासना इसलिए श्रेष्ठ है कि प्रतिमा में साक्षात् परमेश्वर का सान्निध्य लगता है। पूजन के साथ प्रतिमास्थ परमात्मा के आलम्बन से एकाग्रता भी बढ़ती है। दूसरी ओर आधार का अभाव होने से निराकारोपासना में मन को जबरन लगाना पड़ता है, अथवा योगविधियों से स्थिर करना पड़ता है।

11 आनन्दसंहिता, उपरिवत् 13.1 12 चौधरी, राघवप्रसाद, उपरिवत्, पृष्ठ 11

13 महर्षि भृगु, वैखानस, खिलाधिकार- 20.16-17, माडंबाकं कृष्णस्वामि श्रीनिवास भट्टाचार्य (सम्पादक) (1997), तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति, पृष्ठसंख्या 302.

ऐतिहासिकता की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि वैखानस सम्प्रदाय कोई नई चीज नहीं। ऋग्वेद, शुक्ल यजुर्वेद, सामब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता आदि में वैखानस ऋषियों का उल्लेख मिलता है।

मनुस्मृति[14] में आए श्लोक में विशिष्ट वैखानस सम्प्रदायी ऋषियों के लिए निर्देश न होकर समस्त वानप्रस्थियों का ही वाचक है। फिर भी 'देवीभागवत'[15] में शुकदेव-जनक संवाद के अन्तर्गत आए- 'वैखानसा ये मुनयो मिताहारा जितव्रताः' में कथन में वैखानसों की ही पुष्टि जान पड़ती है। अस्तु; यह वैष्णव सम्प्रदाय में वैखानस की महत्ता अधिक है।

'आनन्दसंहिता' ही इस सम्प्रदाय का आधार ग्रन्थ लगता है। इसमें आया है कि स्वायंभुव मन्वन्तर के सत्ययुग, शुक्ल संवत्सर, श्रावण पूर्णिमा, श्रवण नक्षत्र, सोमवार, सिंह लग्न में नैमिषारण्य में वैखानससूत्रों का निर्माण सम्पन्न हुआ। यह कथन प्रक्षिप्त लगता है, और बातें छोड़ भी दी जाएँ तो भी दिनों का प्रचलन इतना पुराना नहीं है।

'विष्णुभक्त-सहस्रेभ्यो विप्रो वैखानसो वरः।[16]
'धर्माणां वैष्णवो धर्मः स्मृतीनां मानवी स्मृतिः।
विप्राणां वेदविदुषां सदा वैखानसो वरः॥[17]
'अनन्यशरणा राजन्! तस्माद् वैखानसो वरः।[18]

जैसे उल्लेखों से वैखानस आगम की श्रेष्ठता सिद्ध होती है।

***

14. - पुष्पमूलफलैर्वापि केवलैर्वर्तयेत्सदा। कालपक्वैःस्वयंशीर्णैर्वैखानसमते स्थितः॥ मनुस्मृति, 6.21 शास्त्री, राजवीर, (सम्पा.) (2005 ई.), आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, पृ. सं. 467.
15. 'देवीभागवत', 1.19.17
16. वैखानस गृह्यसूत्र, आकुलमन्नाडु श्री, रो., पार्थसारथिभट्टाचार्य, भाग 1, (1997ई.) तिरुमलतिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति (महाभारत शान्तिपर्व के नाम पर उद्धृत) , पृ. 41.
17. उपरिवत्, ब्रह्मवैवर्तपुराण के नाम पर उद्धृत।
18. उपरिवत्, कूर्म पुराण के नाम पर उद्धृत।

लेखकों से निवेदन

'धर्मायण' का अगला अंक **खरमास-विशेषांक** के रूप में प्रस्तावित है। पौष मास को लेकर अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ समाज में व्याप्त है। यह भी धारणा फैल गयी है कि इस मास में देवी-देवता की भी पूजा नहीं करनी चाहिए। जबकि पुराणों में मास के आध्यात्मिक महत्त्व पर अनेक स्थल लिखे गये हैं। लोगों में व्याप्त भ्रान्ति को दूर करते हुए इसके आध्यात्मिक महत्त्व पर केन्द्रित यह अंक प्रस्तावित है। इस अंक में व्यवहृत सन्दर्भ की शैली में लिखित सन्दर्भ के साथ शोधपरक आलेखों का प्रकाशन किया जायेगा। अपना टंकित अथवा हस्तलिखित आलेख हमारे ईमेल **dharmayanhindi@gmail.com** पर अथवा ह्वाट्सएप सं- +91 9334468400 पर भेज सकते हैं। प्रकाशित आलेखों के लिए पत्रिका की ओर से पत्र-पुष्प की भी व्यवस्था है।